आपने लिखा

संयोग वश मुझे संदर्भ पत्रिका का एक अंक पढ़ने का मौका मिला। पत्रिका देखकर ऐसा लगा कि हिन्दी में स्तरीय विज्ञान लेखन का कार्य रुका नहीं है। इस पत्रिका के माध्यम से जन सामान्य में विज्ञान के प्रति जो रुचि उत्पन्न की जा रही है वह निश्चित ही सराहनीय है। इस पत्रिका में अपने लिखे कुछ लेख प्रकाशित करवाना चाहता हूं जो लेसर, अतिचालकता जैसे विषयों से संबंधित हैं।

आशुतोष कुमार शुक्ल
152, फतेहपुर बिछुआ, टैगोर टाउन
इलाहाबाद

अंक 43 पढ़कर अच्छा लगा। संदर्भ के बारे में लिखना मुश्किल है। इसे पढ़कर कोई भी इसका पाठक बनने के लिए तत्पर हो जाएगा। इस अंक में 'नकल क्यों नहीं', 'विज्ञान से शांतिवाद', 'सदानंद की नन्हीं दुनिया' लेखों को पढ़कर ज्ञानवर्द्धन हुआ। वास्तव में बच्चों और बड़ों की कला में अंतर होता है। बच्चे अनुकरण नहीं, अध्ययन करते हैं। वयस्क उनकी कला से सदा अनभिज्ञ रहते हैं। सदानंद की नन्हीं दुनिया पढ़कर बच्चों की निराली दुनिया का मज़ा आया। महान वैज्ञानिक आइंस्टाइन का कथन सत्य है कि शिक्षा व्यवस्था को सामाजिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के अनुकूल बनाना होगा तभी समाजवादी अर्थव्यवस्था की स्थापना हो सकती है।

रमेश शर्मा
सी-1/79, केशवपुरम, दिल्ली

अंक 43 में 'बांस के फूल का किस्सा' और 'पाठ्यक्रम निमार्ण के विविध आयाम' बहुत रुचिकर लगे। इसमें आपने पढ़ने की सामग्री कैसी हो, क्या पढ़ना चाहिए आदि समझाकर हमारी जानकारी को बढ़ाया है। सवालीराम से मेरा एक सवाल है कि – फूलों के रंग भिन्न-भिन्न क्यों होते हैं। कृपया सवाल का जवाब ज़रूर देना।

मीना लदोईया
कक्षा 10वीं, पोस्टः डाबरी, भदरा
हनुमानगढ़, राजस्थान

मैं संदर्भ का नियमित पाठक हूं। अंक 37 में प्रो. यशपाल का लेख पढ़ा। लेख पढ़कर लगा मानो प्रो. यशपाल मेरे मन की बात ही कह रहे हैं। किन्तु एक बात मेरी समझ में नहीं आई कि रंगीन चूड़ी तोड़कर उसका पावडर बनाने पर पावडर का रंग सफेद क्यों हो जाता है? हालांकि मैं इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रथम वर्ष का छात्र हूं फिर भी मैं यह समझ नहीं पाया। इस सवाल का जवाब देकर मेरा मार्गदर्शन करें।

राधव बावा
बी. टेक. द्वितीय सेमीस्टर, हांसी, हरियाणा

नए वर्ष के प्रथम माह में पुराने वर्ष का अंक एक अमूल्य तोहफे के रूप में मिला। इस अंक की गुणवत्ता एवं स्तरीय सामग्री को पढ़कर अब मेरा मन यह नहीं कहता कि आपसे इसके विलंब की शिकायत करूं।

इस अंक में देवी प्रसाद का लेख 'नकल क्यों नहीं' काफी विचारोत्तेजक लगा।

हालांकि यह लेख कला या चित्रकला के संदर्भ में है फिर भी यह बात प्रश्नों को हल करने में होने वाली नकल पर भी लागू होती है।

इस अंक में यह संयोग ही है कि शुरू के दोनों लेख कला को समर्पित थे। मुझे अफसोस है कि राजस्थान में कक्षा 1 से 10 तक चित्रकला विषय पाठ्यक्रम में है ही नहीं। कला-शिक्षा के नाम पर एक किताब लागू है परन्तु इस विषय का पास-फेल पर कोई प्रभाव न होने के कारण इसको व्यर्थ मानते हुए कोई भी पढ़ता नहीं है। चित्र बनाने में बच्चों से ज़्यादा अध्यापकों में ही झिझक पाई जाती है। जबकि बच्चों की चित्र बनाने में भरपूर रुचि होती है।

कैरन हेडॉक ने हमेशा की तरह इस निबंध में भी काफी गहराई से चिंतन, मनन और अवलोकन करके अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। मुझे खुशी है कि हमारे देश में ऐसे समाजसेवी, शिक्षक और शिक्षाविद् कार्यरत हैं।

बांस के फूलों का किस्सा काफी रोचक लगा। साबुन के बारे में सवालीराम का जवाब पसंद आया, पर साथ में आजकल बाज़ार में मिल रहे साबुन को काम में लेते समय कौन-कौन-सी सावधानियां रखनी चाहिए इस बाबत कुछ नहीं बताया। इसे भी पूरा करने की कृपा करें।

गणित की गतिविधियों पर एकलव्य संस्था द्वारा प्रकाशित किताब के बारे में जानकारी मिली। कृपया वैज्ञानिकों पर भी कोई अच्छी किताब प्रकाशित कीजिए।

पाठ्यक्रम निर्माण पर रश्मि पालीवाल का लेख विचारणीय था। राजस्थान में भी इस वर्ष से पुस्तकों को बदलने का कार्यक्रम शुरू हो गया है। कक्षा पहली और दूसरी की किताबें बदली जा चुकी हैं, इनमें काफी सुधार है। लेकिन एक और दुखद पहलू यह भी है कि प्राथमिक स्तर की किताबें लिखवाने के लिए या तो महाविद्यालयों के प्राध्यापकों को बुलाया जाता है या कवियों या लेखकों को। कई बार इन लोगों की न तो बाल-मनोविज्ञान में रुचि होती है, न शिक्षण सिद्धांतों का समुचित ज्ञान। इन आयामों पर भी पाठ्यक्रम निर्माण महत्वपूर्ण मुद्दा बन जाता है।

रमेश जांगिड़ (शिक्षक ;
आसन, हनुमानगढ़, राजस्थान

बहुत दिनों से किसी ऐसी पत्रिका की तलाश थी जो हिन्दी के माध्यम से विज्ञान संबंधी लेख प्रकाशित करती हो। सौभाग्य से संदर्भ का पुराना अंक मिला। पढ़कर प्रसन्नता हुई। बहुधा ऐसी उत्तम पत्रिकाएं धन के अभाव में अधिक समय तक नहीं चल पाती और उन्हें बंद करना पड़ता है। लेकिन मुझे विश्वास है कि संदर्भ के साथ ऐसा नहीं होगा।

पुरुषोत्तम चितले
चंद्रशेखर सोसायटी, अंधेरी, मुंबई